[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

" नारी का बदलता स्वरुप "

सोनिया देवी
सहायक–प्रोफेसर, हिन्दी–विभाग
गर्वनमेंट डिग्री कॉलेज
महानपुर ! जम्मू व कश्मीर

भूमिका:–

आज भी हमारे समाज में पुरुषों की प्रधानता है। महिलाओं को आज भी वह अधिकार प्राप्त नहीं है। जो पुरुषो को प्राप्त है। महिलाओं के बारे में लोगों के दृष्टिकोण एक जैसे नहीं है। महिलाओं की स्थिति को सदैव एक जैसा नही माना गया। एक ओर जहां " **यत्र नार्यः पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।** "

" यदि ईश्वर प्रकाश पुजं है तो नारी उसकी किरण है जो प्रकाश को चारों ओर बिखेर देती है "

यदि ईश्वर शब्द है तो नारी उसका अर्थ है। जैसी उक्तियॉ समाज में प्रचलित है। वही दूसरी ओर नारी के पालन–पोषण को पड़ोसी के पौधे को सींचने के समान बताया गया है। उसे मात्र एक आर्थिक उत्तरदायित्व माना गया है। मनु ने तो यहां तक कहा है कि–

" हिन्दू महिला आजीवन पुरुष पर आश्रित है–

बचपन में पिता पर, विवाहोपरान्त पति पर तथा वृद्धावस्था में पुत्र पर। "

इसमें से एक भी अवस्था में पुरुष का आश्रय न रहने पर उसे कलंकित व उपेक्षित किया गया. तथा अपमान व तिरस्कार की ज्वाला में उसके जीवन को भस्म कर दिया गया। प्रारम्भ से ही देखा जाये तो इन्हें किसी न किसी रुप में प्रताड़ित किया गया है। सम्पूर्ण विश्व में इन्हें सम्मान के साथ नहीं देखा जाता है। यद्यपि मानव समाज महिला व पुरुष दोनों की सम्मिलित रचना है। व समाज के ढांचे को संवारने में दोनों ही महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं तथापि केवल जैविक आधर पर अतंर होने के कारण महिलाओं को अत्यंत निष्कृष्ट माना गया है।

मैकबेथ में स्पष्ट कहा गया है–

" कि पुत्र को जन्म देने वाली महिलाएँ ही सम्मान योग्य हैं, जो पुत्री को जन्म देती है। उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। "

(1.) आज की महिलायें अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वे अपने अधिकारों की मांग करने में हिचकिचाती नहीं है। और न चुपचाप अन्याय एंव जुल्म सहती है। वे अपनी नौकरी, जीवन, साथी एंव जीवन–शैली का चुनाव स्वंय करने लगी है। साथ ही अपने कर्त्तव्यों को भी वे बखूबी निभाती है।

" चाहे वह कर्त्तव्य परिवार के प्रति हो या देश या समाज के प्रति । "

नारी को समाज की बढती हुई समस्याओं की जानकारी होती है। और उसे दूर करने में सहयोग भी देती है। जाहिर है वह आज एक ऐसी शख्सियत के रुप में खुद को पाने लगी है, जो अपने मसले अपने फैसले और अपने बजूद की खुद मुख्तारी करना जानती है यानी बह बात–बात पर दूसरों का मॅह ताकने वाली माटी की मूर्ति नहीं रही है।

(2.) आज की **महिलायें अपना अस्तित्त्व** बनाये रखना चाहती है। वह अपने बजूद के साथ खुद को प्रस्तुत करती है। और अपनी एक अलग पहचान बनाती है। कभी अधिकांश महिलाओं की पहचान अपने पिता या पति से होती थी, उसकी अलग से कोई पहचान नही थी। आज वह अनेक बाधाओं, सामाजिक नियमों, मान्यताओं और सस्कारो को पार करते हुए इस स्थिति पर पहुँची है कि वह खुद के बारे में निर्णय ले सकती है।

(3.) इक्कीसवीं सदी के प्रांरभ से ही **महिलाओं का बदलहता स्वरुप** ज्यादा साफ और नुमाया हो आया है। इस तरह आज की आधुनिक नारी केवल उपयोग की वस्तु नहीं है और न ही किसी लेखक के उपन्यास की ऐसी नायिका है जो जुल्म सहते हुए चुप रहे। आज की नारी सक्षम है। सबल है और अपने बहुआयामी रुपों में हमारे सामने है।

" अब वह केवल घर संभालनें वाली हाउस वाइफ'' ही नहीं है, बल्कि बाहर के काम भी कुशलतापूर्वक सँभालती है। "

आज की मीहला को यह समझ में आने लगा है कि शिक्षा के बिना स्वतंत्रता या अधिकार की बात करना बेकार है।

पहले जो पुरुष निर्णय लेते थे उसे ही स्त्री मानती थी, जिसके कारण वह मानसिक एवं शारीरिक रुप से पुरुषो द्धारा शोषित होती थी

जैसे–जैसे वह शिक्षित होने लगी, उसे सही और गलत की पहचान होने लगी है। महिलाओं के बदलते स्वरुप में लड़कियों की **शिक्षा की क्रांति** एक महत्त्वपूर्ण कदम है। यही वजह है कि आज महिला जीवन का पूरा परिदृश्य बदला–वदला सा नजर आता है।

" रिपोर्ट आफॅ कंसल्टेटिव कमेटी आफॅ पार्लियामेंट २००६ के अनुसार १९५० में १०० पुरुषों के मुकाबले मात्र १४ महिलायें उच्च शिक्षा प्राप्त करती थी, वर्तमान समय में स्त्री पुरुष शिक्षा का अनुपात ६८:१०० हो गया है। "

इसकी वजह यह है कि महिलायें विशेषकर लड़कियॉ शिक्षा के मामले में अत्यधिक जागरुक हो रही है।

(4.) शिक्षित होने के साथ–साथ महिलायें आर्थिक रुप से स्वावलंबी भी हो रही है। आज महिलायें पुरुषों के साथ कदम–से–कदम मिलाकर चल रही है। आज लड़कियॉ केवल नर्स ,टीचर, या सेक्रेटरी ही नहीं बनना चाहती है, बल्कि वे इंजीनियर वैज्ञानिक, पायलट, पुलिस, पत्रकार वे सबकुछ बनना चाहती है जिस पर केवल पुरुषों का अधिकार था। विभिन्न कंपनियों, बैकों एंव वित्तीय संस्थानों आदि में आज महिलायें उच्च पदों पर आसीन है। प्रशासन एंव न्याय–पालिका में भी महिलायें बढ़चढ़ कर आगे है। आज की महिलायें आर्थिक रुप से अपने परिबार को सहयोग भी देती है। कुछ करने एंव पाने के कारण उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

(5.) **ग्रामीण महिलायें** भी **शहरों की महिलाओं** के साथ–साथ **जागरुक** हो रही है। वे शिक्षित होने के साथ–साथ अपने **अधिकारों एंव अस्तित्त्व** के लिए आवाज उठाने लगी है। आज ग्रामीण क्षेत्र की महिलायें भी अपने परिवार की देखभाल के साथ–साथ स्वरोजगार शुरु कर आर्थिक रुप से मजबूत होने लगी है। ग्रामीण महिलाओं मे जागरुकता आज के कारण ही अनेक विरोधों के बावजूद कई गॉवों के पंचायत में उनका दखल बढ़ता जा रहा है। वह बाकायदा चुनाव जीतकर सरपंच , मुखिया आदि बन रही है और गॉव के विकास में योगदान दे रही है।

उपसंहार:–

अन्त में यही कहा जा सकता है कि समय के साथ स्थितियॉ बदल रही है इसमें कोई शक नहीं, लेकिन अभी भी ये बदलाव महज मिसालें बन कर रह गये है। कानुन संविधान और समाज अपनी जगह है लेकिन सच यह है कि अपनी जगह बनाने के लिए महिलाओं की जंग अभी भी जारी है। आज की महिलायें आत्मसचेतन, आत्मनिर्भर एअंव आत्मविश्वासी है। वह जो भूमिका पारिवारिक , सामाजिक, व्यावासथिक एंव आर्थिक रुप से निभाना चाहती है। उसके प्रति सचेत है, फिर भी महिला सशक्तिकरण सही अर्थो में तभी सार्थक होगा जब हर महिला मजबूत पखं लिये खुले आसमान में स्वयं उड़कर अपनी खुद की एक पहचान बनायेंगी। साथ ही वह आने वाली पीढ़ी के लिए एक बेहतर संसार का निर्माण करने का प्रयास करेगी। अत: यह अत्यंत आवश्यक हैकि महिलाओं कीकार्य करने की क्षमता को ओर अधिक सशक्त किया जाये। जिससे देश के विकास में महिलायें अपनी भागीदारी पूरी जिम्मेदारी के साथ निभा सके तथा उनके द्धारा किये गये कार्य को सही मुद्रा में मापा जा सके।

संदर्भ:–

1- डॉ सानपशाम; महिला सशक्तिकरण; पृष्ठ संख्या : 18
2- डॉ सानपशाम; महिला सशक्तिकरण; पृष्ठ संख्या : 18
3- डॉ सानपशाम; महिला सशक्तिकरण; पृष्ठ संख्या : 18
4- डॉ सानपशाम; महिला सशक्तिकरण; पृष्ठ संख्या : 90